डा. गुड्डी कुमारी
(इतिहास विभाग)
A.N.D. College, Patory(Samastipur)
What'sapp.No. 7070340666
LECTURE - 1..
B.A.(H) part-1
Topic...मौर्य सम्राट अशोक का धम्म।
मौर्य सम्राट अशोक का धम्म.....

राजनीतिक दृष्टिकोण से अशोक के शासनकाल की सबसे महत्वपूर्ण घटना कलिंग के साथ उसका युद्ध था। कलिंग युद्ध की भीषण रक्त पात से अशोक का हृदय अत्यधिक प्रभावित हुआ और अशोक ने शस्त्र ग्रहण नही करने की प्रतिज्ञा की। अशोक ने "भेरीघोष" के स्थान पर "धम्मघोष" की घोषणा और कहा की वास्तविक विजय वह है जो "धम्म" के द्वारा प्राप्त की जाती हैं, न कि युद्ध के द्वारा।

@ अशोक का धम्म...
अशोक के अभिलेखों में "धम्म"शब्द का प्रयोग बार बार हुआ है। अशोक ने अपने दूसरे स्तंभ लेख में "धम्म" शब्द की व्याख्या इन शब्दों में की हैं - अपासिनवे, बहुकथाने, दया, दान, सोचये अर्थात (पापहीनता) अपासिनवे, (बहुकल्याण)बहुकथाने, दया, दान, सत्याता, और शुद्धि ही धम्म है। अशोक के धम्म का बौद्ध धर्म से कोई संबंध नहीं था क्योंकि भाब्रू अभिलेख को छोड़कर कहीं भी धम्म का प्रयोग बौद्ध धर्म के लिए नहीं किया गया है। बौद्ध धर्म के लिए सद्धर्म या संघ शब्द का प्रयोग किया गया है।

अशोक का धम्म सभी धर्मों का सार था। उस पर सभी धर्मों का प्रभाव था। अशोक की उदारता इतनी सार्वभौम थी कि उसने कभी अपना व्यक्तिगत धार्मिक विचार जनता पर लाने का प्रयत्न नहीं किया। जिस धम्म का रूप उसने संसार के सामने रखा वह "वासुदेव कुटुंबकम" के सिद्धांत पर आधारित था। अशोक अपने विचारों में अपने समय से बहुत आगे था। उसका धम्म अनेक सुधारवादी आंदोलन की पृष्ठभूमि प्रस्तुत करता है। जीवन को अपेक्षाकृत सुखी और पवित्र बनाने के लिए उसने कुछ आचरणों के विधान जारी किये। द्वितीय और तृतीय स्तंभलेखों और सप्तम शिलालेख में धम्म का सार मिलता है, जो इस प्रकार है -

द्वितीय लघुशिलालेख में अशोक कहता है- माता पिता की उचित सेवा, सर्व प्राणियों के प्रति आदर भाव तथा सत्यता गुरुतर सिद्धांत है। इन धर्म गुणों की वृद्धि होनी चाहिए।

ग्यारहवें शिलालेख में अशोक कहता है- दास और भृत्यों तथा वेतनभोगी सेवकों के साथ उचित व्यवहार, माता पिता की सेवा; मित्रों, परिचितों, संबंधियों, ब्राह्मणों, श्रमणों और साधुओं के प्रति उदारता; प्राणियों में संयम और पशुबलि से निषेध, उसका धम्म मूल रूप से आचरणों का विधान था।

तृतीय स्तंभ लेख में अशोक कहता है मनुष्य आत्म निरीक्षण के द्वारा अपने अपासिनवे(उग्रता, क्रोध, मान,इर्ष्या और नैष्ठुर्य) को खत्म कर सकता है।
@ द्वितीय लघु शिलालेख - सच बोलना चाहिए।
@ तृतीय शिलालेख - प्राणियों को ना मारना अच्छा है।
@ चतुर्थ और अष्टम शिलालेख - धर्म अनुशासन।
@ नवम शिलालेख - धर्ममंगल।
@ एकादश शिलालेख - धर्मदान, के महत्व के बारे में जानकारी मिलती है।
अशोक का धम्म मानवोचित या समाजोचित था।
इसके 2 पहलू थे (1) व्यावहारिक और(2) सैद्धांतिक

व्यवहारिक पहलू के दो पक्ष थे (1) स्वीकारात्मक और (2) निषेधात्मक
व्यवहारिक पहलू -
(1) स्वीकारात्मक पक्ष :-
* प्रथम स्तंभ लेख - धन प्राप्ति के साधनों का उल्लेख है - धर्मानुराग, आत्मपरीक्षण, सुश्रुषा एवं उत्साह।
* द्वितीय स्तंभ लेख - कल्याण, दया, दान, सत्य और शौच।
* सप्तम स्तंभ लेख - अन्य के अलावा मृदुता और साधुता।
सप्तम शिलालेख - संयम, भावशुद्धि, कृतज्ञता और दृढभक्ति।
* त्रयोदश शिलालेख - संयम समझा और मूल प्रवृत्ति।
इन तथ्यों के आधार पर हम कर सकते हैं की नैतिकता ही अशोक के धम्म की आधारशिला थी।
2) निषेधात्मक पक्ष -अपासिनव की ओर ले जाने वाली कुप्रवृत्तियों से बचना ही सिद्धांत के निषेधात्मक पक्ष है।
सैद्धांतिक पहलू - व्यवहारिक पहलू के अतिरिक्त अशोक के धम्म का सैद्धांतिक पहलू भी था। अशोक का परलोक में विश्वास था वह अपनी प्रजा के हित और पारलौकिक हित की कामना करता था। वह सभी धर्मों की वृद्धि का पक्षपाती था। उसका धर्म सभी धर्मों का सार था। अपासिनवे संबंधी विचार अशोक ने जैन धर्म से ग्रहण किया, बौद्ध धर्म का अनुयायी तो वह था ही और उपनिषदों से भी उसके विचार प्रभावित थे। अपने धम्म के संबंध में अशोक ने कई सिद्धांत बना रखे थे। जिनमें से कुछ निम्नलिखित है-
* पशु जीवन की अवध्यता,
* धार्मिक सहिष्णुता (वाक्य संयम के द्वारा- 12 वां शिलालेख)
* धर्म मंगल की श्रेष्ठता (नवम शिलालेख)

* धर्म दान का महत्व (11 वा शिलालेख)
* पराक्रम की आवश्यकता (दसवां शिलालेख)
इसके लिए आत्मनिरीक्षण, उत्साह और ध्यान आवश्यक है
* धर्म विजय (13 वां अभिलेख)
* धर्म व्रत का पालन (दसवां अभिलेख)

समस्त विशेषताओं को देखकर यह सब स्पष्ट हो जाता है कि अशोक का धम्म रूढ़िवादी कर्मकांडवादि, गुढक्रियावादी और दर्शनमूलक नहीं था। अशोक का धम्म सरल विशुद्ध व्यावहारिक और सर्वग्राह्य था। 'धम्म' अशोक के संपूर्ण शासन के आधारपीठिका था।

अशोक ने धम्म के प्रचार और प्रसार के लिए जो कार्य किए वे इस प्रकार है:-
धार्मिक घोषणाएं और धर्मानुशासनो की आज्ञा (स्तंभ लेख एक और दो)
धर्म स्तंभ का निर्माण, धर्म महामात्र की नियुक्ति और धर्मश्रवण की व्यवस्था (स्थल 3-4,1)
लोक कल्याण का कार्य (स्तंभ 5)
माता पिता की सेवा और नौकरों के प्रति सम्मान व्यवहार (स्तंभ लेख 8)

धर्म श्रवण को अशोक ने धर्म प्रसार के साधनों में पहला स्थान दिया है। इसके लिए पुरुष और राजुक नामक अधिकारियों को जवाबदेह बनाया गया। यह धार्मिक घोषणा के समान था। धर्म अनुशासन को कार्यान्वित करने के लिए अशोक ने धर्मस्तंभों का निर्माण किया और धर्म महामात्र की नियुक्ति की। चतुर्थ पंचम और षष्ट शिलाभिलेखों एवं सप्तम स्तंभ लेख से स्पष्ट है कि अशोक अपने धम्म के सिद्धांतों को चिरस्थाई बनाना चाहता था। अपने राज्याभिषेक के 13 वें वर्ष अशोक ने धम्म महामात्रों की नियुक्ति की। जनकल्याण के बहुत सारे कार्य इसी उद्देश्य से किए गए थे। धर्म नियम के अंतर्गत पशु वध रोका गया।आत्म विवेक एवं परीक्षण पर विशेष जोर दिया गया। दूतों का काम धर्मशास्त्र का प्रसार करना भी था। अपने धर्म का प्रचार उसने भारत में और भारत से बाहर भी किया।

राधाकुमुद मुखर्जी और विंसेंट स्मिथ के अनुसार अशोक का धम्म सार्वभौम धर्म था, क्योंकि उसके आचारमूलक सिद्धांत सभी के लिए मान्य थे। उसका 'धम्म' संप्रदायिक रूढ़िवादिता से बहुत दूर था। इसी में सभी धर्मों के सिद्धांतों का संकलन मिलता है। अशोक ने अपने धम्म के प्रचार में तलवार की शरण नहीं ली, वह जनता के प्रेम और सहानुभूति के आधार पर नैतिक जीवन व्यतीत करने का आदेश दिया। जिन सिद्धांतों के पालन से यह नैतिक उत्थान संभव था उसी को अशोक ने "धम्म" कहा है। संकीर्णता और संप्रदायिकता का उसके धर्म में कोई स्थान नहीं था। जनता के नैतिक एवं आध्यात्मिक स्तर को ऊंचा कर वह उसके मनोबल को बढ़ाना चाहता था। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि अशोक का धम्म सर्वोतम धर्म था।

इस pdf Ka Audio & video देखने के लिए नीचे लिखे लिंक पर क्लिक करें...
https://youtu.be/RrXCRpK9Am8

।।।।।।।।।।।।।।।धन्यवाद।।।।।।।।।।।।।।।।